सुनने में आलसी मत बनो

NURU YA UPENDO www.wingulamashahidi.org | 1

हमारे प्रभु और उद्धारकर्ता यीशु मसीह के नाम में आपको अभिवादन। परमेश्वर के जीवन देने वाले वचनों पर एक बार फिर मनन करने के लिए आपका स्वागत करना हमारे लिए आनंद की बात है।

पवित्रशास्त्र के माध्यम से परमेश्वर बार-बार यह प्रकट करता है कि उसकी गहरी इच्छा है कि उसके लोग ज्ञान, विवेक और आत्मिक परिपक्वता में बढ़ें। फिर भी, बार-बार वह एक बड़ी बाधा से सामना करता है—हमारी आत्मिक उदासीनता और सुनने में आलस्य।

प्रेरित पौलुस ने भी इसी प्रकार के प्रतिरोध का सामना किया। मसीह के विषय में गहन प्रकाशन प्राप्त करने के बाद—विशेषकर मलिकिसिदक की रीति के अनुसार उसकी अनन्त महायाजकता के विषय में—पौलुस कलीसिया के साथ इन सच्चाइयों को साझा करना चाहता था। परन्तु उसे बाधा ज्ञान या इच्छा की कमी से नहीं, बल्कि लोगों की आत्मिक सुन्नता से हुई।

“और परमेश्वर की ओर से उसे मलिकिसिदक की रीति पर महायाजक ठहराया गया। इसके विषय में हमें बहुत कुछ कहना है, परन्तु समझाना कठिन है, इसलिए कि तुम सुनने में सुस्त हो गए हो।”
— इब्रानियों 5:10–11

सुनने में आलसी मत बनो

NURU YA UPENDO www.wingulamashahidi.org | 2

मलिकिसिदक और मसीह का रहस्य

मलिकिसिदक, जिसका उल्लेख सबसे पहले उत्पत्ति 14:18–20 में मिलता है, एक रहस्यमय व्यक्ति है जिसे राजा और याजक—दोनों—कहा गया है। उसने अब्राम को आशीष दी और उससे दशमांश लिया, जिससे यह प्रकट होता है कि उसकी याजकता लेवीय व्यवस्था से पहले की और उससे श्रेष्ठ थी। बाद में भजनकार ने मसीह के विषय में भविष्यवाणी की:

“यहोवा ने शपथ खाई है और वह न पछताएगा,
‘तू मलिकिसिदक की रीति पर सदा का याजक है।’”
— भजन संहिता 110:4

पवित्र आत्मा से प्रेरित होकर पौलुस इब्रानियों 7 में इसे मसीह से जोड़ता है और दिखाता है कि यीशु की याजकता अनन्त है—जो न वंशावली पर निर्भर है और न ही मानवीय नियमों पर, बल्कि अविनाशी जीवन की सामर्थ से स्थापित है।

“परन्तु यह याजक इसलिए स्थायी है, क्योंकि वह सदा बना रहता
है। इसी कारण वह उन्हें जो उसके द्वारा परमेश्वर के पास आते

सुनने में आलसी मत बनो

NURU YA UPENDO www.wingulamashahidi.org | 3

हैं, पूरी रीति से उद्धार कर सकता है।”
— इब्रानियों 7:24–25

यह एक गहरी और महिमामय सच्चाई है, परन्तु पौलुस को खेद था कि विश्वासी इसे ग्रहण करने के लिए आत्मिक रूप से तैयार नहीं थे। वे “सुनने में सुस्त” हो गए थे—अर्थात आलसी, अरुचिकर और आत्मिक रूप से अपरिपक्व।

आज की आत्मिक आलस्य

दुख की बात है कि यह समस्या आज भी उतनी ही प्रासंगिक है। बहुत से विश्वासी कहते हैं कि उपदेश “बहुत लंबे” हैं या बाइबल के वचन “बहुत गहरे” हैं, और वे शीघ्र ही रुचि खो देते हैं। परन्तु वही लोग घंटों फिल्में देख सकते हैं, अंतहीन रूप से इंस्टाग्राम स्क्रॉल कर सकते हैं, या सैकड़ों पन्नों की कहानियाँ बिना किसी शिकायत के पढ़ सकते हैं। हम मनोरंजन को अपना ध्यान देते हैं, परन्तु जब परमेश्वर के वचन के लिए केवल 10 मिनट देने की बात आती है तो शिकायत करते हैं।

हमें स्वयं से पूछना चाहिए: यह हमारी आत्मिक भूख के बारे में क्या बताता है?

सुनने में आलसी मत बनो

NURU YA UPENDO www.wingulamashahidi.org | 4

“धन्य हैं वे जो धार्मिकता के भूखे और प्यासे हैं, क्योंकि
वे तृप्त किए जाएंगे।”
— मत्ती 5:6

प्रभु उन्हें प्रतिफल देता है जो उसे लगन से खोजते हैं—उन्हें नहीं जो केवल कभी-कभी या सुविधा के अनुसार उसके पास आते हैं।

“और विश्वास बिना उसे प्रसन्न करना असम्भव है; क्योंकि जो परमेश्वर के पास आता है, उसे विश्वास करना चाहिए कि वह है और अपने खोजने वालों को प्रतिफल देता है।”
— इब्रानियों 11:6

पौलुस का उदाहरण

पौलुस को इतने महान प्रकाशन मिले—इतने महान कि उसे घमण्ड से बचाने के लिए उसके शरीर में एक काँटा दिया गया (2 कुरिन्थियों 12:7)—फिर भी उसने कभी सीखना, पढ़ना या परमेश्वर को खोजना नहीं छोड़ा। अपने जीवन के अन्त के निकट, जेल में रहते हुए भी, उसने लिखा:

सुनने में आलसी मत बनो

NURU YA UPENDO www.wingulamashahidi.org | 5

“जब तू आए, तो वह चोगा जो मैं त्रावस में कर्पुस के पास छोड़
आया हूँ, और पुस्तकें, और विशेष करके चर्मपत्र ले आना।”
— 2 तीमुथियुस 4:13

संभवतः इनमें पवित्रशास्त्र की प्रतियाँ (व्यवस्था और भविष्यद्वक्ता) थीं। यदि पौलुस, जो तीसरे स्वर्ग तक उठा लिया गया था (2 कुरिन्थियों 12:2), फिर भी परमेश्वर के वचन को पढ़ने की लालसा रखता था, तो हमें कितना अधिक रखनी चाहिए!

हमारी वृद्धि में हमारी ही बाधा

अक्सर हमारा आत्मिक अनुशासन की कमी ही वह कारण होती है कि परमेश्वर हमें दूर प्रतीत होता है। हम बिना स्थान बनाए ईश्वरीय प्रकाशन की अपेक्षा करते हैं। हम “गहरी बातों” की लालसा रखते हैं, परन्तु मूल आत्मिक अभ्यासों—प्रार्थना, अध्ययन, और वचन पर मनन—से बचते हैं।

यीशु ने एक बार कहा था:

सुनने में आलसी मत बनो

NURU YA UPENDO www.wingulamashahidi.org | 6

“मैं ने तुम से पृथ्वी की बातें कही हैं और तुम विश्वास नहीं करते; तो यदि मैं स्वर्ग की बातें कहूँ तो कैसे विश्वास करोगे?”
— यूहन्ना 3:12

मसीह और अधिक प्रकट करना चाहता था, परन्तु लोगों की आत्मिक अपरिपक्वता ने उसे सीमित कर दिया। कितनी बार हम तुच्छ बातों में उलझे रहने के कारण गहरी सच्चाइयों से चूक जाते हैं?

आत्मिक परिश्रम का आह्वान

मसीही जीवन निष्क्रिय नहीं है। हमें बढ़ने, परिपक्व होने और आगे बढ़ते जाने के लिए बुलाया गया है:

“नवजात बालकों के समान निर्मल आत्मिक दूध की लालसा करो,
ताकि उसके द्वारा उद्धार में बढ़ते जाओ।”
— 1 पतरस 2:2

“परन्तु हमारे प्रभु और उद्धारकर्ता यीशु मसीह के अनुग्रह

सुनने में आलसी मत बनो

NURU YA UPENDO www.wingulamashahidi.org | 7

और ज्ञान में बढ़ते जाओ।”
— 2 पतरस 3:18

मनोरंजन या सोशल मीडिया पर बिताया गया समय तटस्थ नहीं है। यह परमेश्वर के लिए हमारे समय से प्रतिस्पर्धा करता है। इंस्टाग्राम या फेसबुक न होने से आपका जीवन खराब नहीं होगा—परन्तु परमेश्वर के वचन की उपेक्षा अवश्य करेगी।

यदि हम सचमुच परमेश्वर को जानने के प्रति गंभीर हैं, तो हमें विचलनों को बंद करके उद्देश्यपूर्ण रूप से उसकी खोज करनी होगी।

अंतिम प्रोत्साहन

याद रखिए, परमेश्वर अपेक्षा करता है कि उसके बच्चे प्रतिदिन बढ़ें—परिपक्वता में, मसीह के स्वरूप में, और उसके साथ गहरी संगति में।

“इस कारण आओ, हम मसीह की आरम्भिक शिक्षा को छोड़कर सिद्धता
की ओर बढ़ें…”
— इब्रानियों 6:1

सुनने में आलसी मत बनो

NURU YA UPENDO www.wingulamashahidi.org | 8

आइए हम आलसी श्रोता न बनें। आइए हम सत्य के लगनशील खोजी बनें।

शालोम।

JIUNGE NA GROUP LETU LA WHATSAPP HAPA >> WHATSAPP GROUP….

Share on:
WhatsApp